दैनिक जागरण
राष्ट्र की समृद्धि एक साझा दायित्व है

सीमांत इलाकों की सुध

चीन की सीमा से लगते इलाकों में सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण 44 सड़कों के निर्माण का फैसला एक जरूरी कदम है, लेकिन इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती कि यह वह कदम है जो अब तक उठा लिया जाना चाहिए था। आजादी के 70 साल बाद सीमांत इलाकों में सुरक्षा के आवश्यक उपाय न किया जाना यही बताता है कि सुरक्षा संबंधी प्राथमिकताओं पर समय रहते ध्यान नहीं दिया गया। कम से कम अब तो यह सुनिश्चित किया ही जाना चाहिए कि सीमांत इलाकों का विकास सही तरीके से हो। यह विकास केवल रणनीतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के उद्देश्य से ही नहीं, बल्कि ऐसे इलाकों में रह रहे लोगों की बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिए भी किया जाना चाहिए। यह ठीक है कि चीन की सीमा से लगते अधिकांश इलाके हिमालय क्षेत्र में हैं और इस क्षेत्र में सड़कों, पुलों एवं अन्य बुनियादी ढांचे के निर्माण में अनेक समस्याएं आती हैं, लेकिन ऐसा लगता है कि कहीं न कहीं राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी भी आड़े आई। ऐसा नहीं है कि केवल सीमांत क्षेत्र के पर्वतीय अंचलों के विकास की ओर ही पर्याप्त ध्यान देने से बचा गया, क्योंकि यह भी सामने आ रहा है कि अभी पाकिस्तान से लगती सीमा और विशेष रूप से राजस्थान एवं पंजाब में भी सुरक्षा के उपयुक्त उपाय किए जाने शेष हैं। समझना कठिन है कि मैदानी इलाकों में भी सुरक्षा के समुचित कदम समय रहते क्यों नहीं उठाए गए? बेहतर हो कि सीमांत इलाकों की समग्र सुरक्षा की गहन समीक्षा की जाए।

सीमावर्ती क्षेत्रों में सड़कों और अन्य बुनियादी ढांचे का निर्माण केवल इस मकसद से ही नहीं किया जाना चाहिए कि किसी आपात स्थिति में सेना तत्काल वहां पहुंच सके, बल्कि यह ध्यान रखकर भी किया जाना चाहिए कि ऐसे इलाकों में रहने वाले खुद को उपेक्षित न महसूस करें। इस मामले में चीन से सबक लिया जाना चाहिए। माना कि चीन सरीखी विकास की तीव्र गति की बराबरी कर पाना कठिन है, लेकिन इसका कोई औचित्य नहीं कि हम सुरक्षा के मामले में आवश्यक कदम उठाने में भी उससे पीछे दिखें। हिमालयी क्षेत्र के पर्वतीय एवं सीमांत इलाकों में सुरक्षा और विकास संबंधी जरूरतों को पूरा करने के साथ ही इस पर भी ध्यान देने की जरूरत है कि इन इलाकों का पारिस्थितिकी तंत्र कैसे सुरक्षित रहे। यह इसलिए अनिवार्य है, क्योंकि यह पारिस्थितिकी तंत्र प्राकृतिक संपदा का एक बड़ा स्रोत है। इस तंत्र की देखभाल एक विरासत की तरह की जानी चाहिए। इसलिए और भी, क्योंकि यह तमाम नदियों का उद्गम होने के साथ ही देश के जलवायु चक्र को संतुलन भी प्रदान करता है। स्पष्ट है कि सुरक्षा तंत्र को मजबूत बनाने और विकास की चिंता करते हुए हिमालयी क्षेत्र का संरक्षण भी हमारी प्राथमिकता में होना चाहिए। यह दूरदर्शिता में कमी का ही एक प्रमाण है कि सीमांत क्षेत्र के कई पर्वतीय इलाकों में ग्रामीण आबादी घटती जा रही है। कुछ इलाकों में तो गांव के गांव खाली होते जा रहे हैं। ऐसी स्थिति क्यों बन रही, इसकी तह तक जाना ही होगा, क्योंकि सीमांत इलाकों की आबादी एक तरह का सुरक्षा चक्र होती है।

खून का संकट

थैलीसीमिया और हीमोफीलिया के मरीजों को जान बचाने के लिए अक्सर खून की जरूरत पड़ती है, मगर आज झारखंड में खून का संकट चल रहा है। राज्य के सबसे बड़े सरकारी अस्पताल रिम्स में ही इसकी भारी किल्लत है। रोज यहां कोई 70 यूनिट खून की जरूरत पड़ती है, मगर यहां का ब्लड बैंक खाली है। एक दिन पहले स्टॉक में सिर्फ 65 यूनिट खून था और दोगुना लोग खून के लिए भटक रहे थे। ब्लड डोनर कार्ड होल्डरों के लिए भी खून की गारंटी नहीं। यह एक प्रकार से विश्वास के संकट जैसा भी है। प्रदेश में कोई 55 ब्लड बैंक हैं जिनमें 19 सरकारी हैं। सरकारी ब्लड बैंकों में सालाना कोई 40 हजार यूनिट ब्लड का संग्रहण होता है। उसमें पचास फीसद से अधिक की दरकार तो रिम्स को ही रहती है। चार पांच माह पूर्व सरकारी अस्पतालों में सरकार ने मुफ्त खून की व्यवस्था की है। यानी खून के बदले खून के लिए 350 रुपये प्रोसेसिंग शुल्कमाफ। निजी अस्पतालों-ब्लड बैंकों में तो यह और अधिक है। रिम्स के ब्लड बैंक प्रभारी का मानना है कि डोनेशन से आने वाले खून में कमी आई है। रिम्स में खून की कमी की यह बड़ी वजह है। प्राइवेट और दूसरे सरकारी अस्पतालों की निर्भरता भी रिम्स पर रहती है। वे अपने स्तर पर ब्लड डोनेशन कैंप नहीं लगाते और मरीजों को सीधा रिम्स भेज देते हैं। कैंप लगाने के मामले में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों की हालत तो और बुरी है। जिलों के ब्लड बैंक भी खाली हैं। हालांकि खून की चिंता अब सरकार को होने लगी है। तीन माह पूर्व स्वास्थ्य विभाग ने निजी अस्पतालों, नर्सिंग होम को ब्लड डोनेशन कैंप लगाकर खून संग्रहित करने का निर्देश दिया, मगर अभी तक उसका असर नहीं दिख रहा। अब अधिकारी लाइसेंस रद करने जैसी चेतावनी पर भी उतर आए हैं। जाहिर है इसके लिए और अधिक जागरूकता अभियान तथा कैंप लगाकर ब्लड संग्रह करने की जरूरत है। आम आदमी को भी ब्लड डोनेशन को लेकर अपनी जिम्मेदारी का एहसास होना चाहिए। जिससे जरूरतमंदों को समय पर खून मिल सके और उसकी जान बच सके। खून की कमी से किसी की असमय मौत न हो। लोग भले ही जरा सी बात पर खून बहाने को तैयार रहते हैं, मगर खून तो खून है।

इतिहास पर नए नजरिये की जरूरत

हृदयनारायण दीक्षित

भारत का अपना इतिहास बोध है, लेकिन प्रचलित समकालीन भारतीय इतिहास में साम्राज्यवादी और वामपंथी पूर्वाग्रहों की भरमार है

राष्ट्रबोध सामूहिक आत्मबोध है। सामूहिक आत्मबोध का मूल इतिहास बोध है। राष्ट्र की समझ वस्तुतः इतिहास की समझ है। इतिहास बोध सभी अनुशासनों को प्रभावित करता है। सभ्यता इतिहास का भाग है। इतिहास में सभ्यता की सत्य कथा है। समाज का इतिहास है। इतिहास में सामाजिक विकास के विवरण हैं। विज्ञान ने इतिहास की धारा को प्रभावित किया है। विज्ञान का भी इतिहास है। इतिहास निर्मम भूत होता है। इसी भूत में सुंदरतम की अनुभूति संस्कृति है। आर्थिक गतिविधियां इतिहास हैं। इतिहास अर्थशास्त्र को प्रभावित करता है और अर्थशास्त्र इतिहास को। आश्चर्य नहीं है कि केंद्रीय वित्त मंत्रालय से जुड़े अर्थशास्त्री संजीव सान्याल ने हाल में इतिहास पर पुनर्विचार का आग्रह किया है। भारत में लंबे समय तक अंग्रेजीराज था। उन्होंने भारतीय इतिहास को ब्रिटेन के इतिहास का अंग बनाया। उन्होंने दावा किया कि अंग्रेजीराज के कारण ही भारत राष्ट्र बना है। गांधी जी ने 1909 में हिंद स्वराज में लिखा कि 'अंग्रेजों ने पढ़ाया है कि उन्होंने भारत को एक राष्ट्र बनाया है। यह बात गलत है। भारत अंग्रेजों के आने के पहले भी राष्ट्र था।' गांधी जी ने अंग्रेजी ढर्रे के इतिहास लेखन की यह कहकर आलोचना की कि 'आपकी हिस्ट्री कोलाहलपूर्ण है। युद्ध और हिंसा से भरीपूरी है।' सान्याल की बात सही है। भारत के इतिहास पर समग्रता से पुनर्विचार करना चाहिए।

यूरोपीय विचार के समर्थकों का ध्येय अंग्रेजी राज के औचित्य को सही ठहराना था। उन्होंने भारत को विदेशी आक्रांताओं द्वारा विजित देश बताया। आर्य आक्रमण का काल्पनिक इतिहास गढ़ा। सिंधु सभ्यता के पुरातात्विक साक्ष्यों का दुरुपयोग किया कि कथित हमलावर आर्यों ने ईरान, अफगानिस्तान और पंजाब होते हुए भारत के बड़े भू-भाग को रौंदा। फिर उनके रचे इतिहास में मोहम्मद बिन कासिम से लेकर तमाम विदेशी आक्रमण और फिर सीधे ईस्ट इंडिया कंपनी और ब्रिटिश प्रभुत्व की बात है। सान्याल ने याद दिलाया कि इस 'इतिहास में केरल के मार्तण्ड वर्मा द्वारा डचों से युद्ध की जगह नहीं है।' बहराइच के राजा सुहेलदेव पासी ने महमूद गजनी के साले सैयद सालार गाजी को हराया था। भारतीय वीरता का यह इतिहास उपेक्षित है। औरंगजेब के कुशासन के बाद छत्रपति शिवाजी के साम्राज्य के लिए भी इतिहास में पर्याप्त स्थान नहीं है। ऐसे इतिहास से गौरवशाली राष्ट्रबोध नहीं प्राप्त होता। मार्क्सवादी इतिहास में उत्पादन के साधनों के विकास का विवेचन है, लेकिन मनुष्य केंद्रित नहीं है। पार्थ चटर्जी के अनुसार 'देश का इतिहास लिखने के बदले उसके खंडों का इतिहास लिखा जाए। भारत एक इकाई नहीं है।' पुरातत्व इतिहास का मुख्य घटक है। नदियां इतिहास पहचान की सामग्री हैं। प्राकृतिक कारणों से इनमें परिवर्तन होते हैं। सरस्वती ऐसी ही नदी थी। काव्य में भी इतिहास के तत्व होते हैं। उन्हें वैज्ञानिक दृष्टिकोण से जांचना चाहिए।

साइंस कांग्रेस में आंध्र विश्वविद्यालय के कुलपति ने कौरवों को टेस्ट ट्यूब पद्धति से जन्मा कहकर अपनी जगहंसाई कराई। भारत के प्राचीन इतिहास में शरीर विज्ञान, संगीत, समाजशास्त्र, औषधि विज्ञान, अर्थशास्त्र आदि कई शाखाएं हैं। सभी विषयों से बड़ी बात है-अंधविश्वास मुक्त तर्कशास्त्र और दर्शन का इतिहास। यूरोपीय विद्वानों ने भारतीयों पर इतिहास उपेक्षा के आरोप लगाए थे। बंकिमचंद्र चटर्जी ने ठीक लिखा था कि 'इतिहास से हमें ज्ञात होता है कि पराधीनता के परिणाम में पराधीन जाति की बौद्धिक रचनाशीलता समाप्त हो जाती है।'

भारत की इतिहास संकलन परंपरा यूरोप से भिन्न रही है। वैदिक पूर्वजों की रुचि प्रेरक इतिहास वर्णन में थी। ऋग्वेद में ऐसे तमाम इतिहास बोधक सूक्त हैं। इतिहास का अर्थ है कि 'ऐसा हुआ था।' अथर्ववेद में साधक के श्रम परिणामस्वरूप इतिहास और प्रशस्ति उसके साथ चले। यास्क ने 'निरुक्त' में वेदार्थ के लिए इतिहास का अध्ययन जरूरी बताया है। उत्तर-वैदिक काल का छांदोग्य उपनिषद इतिहास में पांचवा वेद है। महाभारत, रामायण महाकाव्य हैं। मार्क्सवादी चिंतक डॉ. रामविलास शर्मा ने ठीक लिखा है 'महाभारत इतिहास है। आख्यान है। आधुनिक अर्थ में यह इतिहास नहीं है, परंतु जिसे आज इतिहास कहते हैं। इतिहास के रूप में नितांत भिन्न भी नहीं है।' अनेक वामपंथी इतिहासकार भारत को एक राष्ट्र नहीं मानते। सुदीप्त कविराज ने इतिहास पर खूबसूरत टिप्पणी की है कि 'मानव समुदाय की अस्मिता की पहचान का मूलभूत कर्तव्य इतिहासबोध है।' भारत का अपना इतिहास बोध है। यह ऋग्वेद से लेकर आज तक विस्तृत है। स्वाधीनता संग्राम में इसी इतिहास बोध का नवजागरण हुआ था। प्राचीन काल में छोटे समूह थे, फिर बड़े समूह बने। जीवन सामूहिक था। साथ रहने, प्रेमपूर्ण साझा कर्म से सांस्कृतिक विकास हुआ। वे एक संस्तुति की प्रीति से राष्ट्र बने, लेकिन सुदीप्त कविराज ने बताया है कि ऐसा भारत 19वीं सदी के पहले नहीं था। तो उसका इतिहास कैसे होगा? मूलभूत प्रश्न है कि जो भारत 19वीं सदी में दिखाई पड़ता है वह क्या शून्य से पैदा हो गया? भारत पहले भी था। उसका अपना इतिहास था और है? भारत की श्रुति, स्मृति, लोकगीत और लोक कथाओं में उसी की चर्चा है। बंकिमचंद्र का वंदे मातरम् इसी राष्ट्रभूमि की स्तुति है।

क्रमबद्ध तथ्यों के आधार पर इतिहास की रचना होती है। प्रचलित भारतीय इतिहास में साम्राज्यवादी, वामपंथी पूर्वाग्रहों की भरमार है। बंकिमचंद्र ने 'भारत कलंक' शीर्षक से लिखा है 'भारत इतने समय से पराधीन क्यों है? यूरोप के लोगों का कहना है कि भारतीय कमजोर होते हैं, लेकिन अंग्रेजों ने भारत पर कैसे राज कायम किया? क्या वे भारतवासियों की सहायता के बिना यहां जीत सकते थे? भारत के बाहर उन्होंने साम्राज्य का विस्तार भारतवासियों की सहायता से किया।' बंकिमचंद्र ने भारतीय इतिहास से यूरोपीय इतिहास मिलाया है। यही तरीका उन्होंने अरब इतिहास के लिए अपनाया है। लिखा है, 'अरब एक प्रकार से दिग्विजयी रहे हैं। उन्होंने जहां आक्रमण किया, वहीं जीते। वे केवल दो देशों से पराजित होकर लौटे हैं। पश्चिम में फ्रांस और पूरब में भारत। मोहम्मद की मृत्यु के छह वर्षों के भीतर उन्होंने मिस्र और सीरिया, 10 वर्ष के भीतर ईरान, एक वर्ष में अफ्रीका और स्पेन, 80 वर्ष के भीतर काबुल और आठ वर्ष में तुर्किस्तान पर अधिकार किया, लेकिन सौ साल में भी भारत पर काबिज नहीं हो पाए। मोहम्मद बिन कासिम ने सिंध जीता था, लेकिन बाद में राजपूतों द्वारा खदेड़ा गया।' बंकिमचंद्र ने समाज की कमजोरियां भी गिनाई हैं। इतिहास का ऐसा विवेचन भारत बोध के लिए उपयोगी है।

भारत में अनेक विविधताएं हैं। इन्हें बेशक इतिहास में जगह दी जानी चाहिए, लेकिन पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक समूचे भारत में एक सांस्कृतिक प्रवाह है। डॉ. आंबेडकर ने इसकी तथ्यगत व्याख्या की थी कि 'भारतवासी आपस में लड़ते रहते हैं, संस्कृति उन्हें एक बनाए रखती है।' यूरोपीय, वामपंथी इतिहास लेखन में काल्पनिक रुग्णताओं को भयावह दिखाया जाता है। राष्ट्रजीवन के शुभपक्ष छोड़ दिए जाते हैं। भारत का इतिहास हजारों वर्ष पुराना है। संप्रति दुनिया का सबसे बड़ा जनतंत्र और संप्रभु गणतंत्र है। यहां ढेर सारी पुरातात्विक सामग्री है। दुनिया का सबसे प्राचीन ग्रंथ ऋग्वेद भारत का है। नालंदा भारत में है। भारत बोध में ही भारतीय पौरुष पराक्रम की ऊर्जा है और इसके स्रोत हमारे वास्तविक इतिहास बोध में हैं। भारत को तथ्यगत इतिहास बोध चाहिए।

(लेखक उत्तर प्रदेश विधानसभा के अध्यक्ष हैं)

response@jagran.com

पूरब से मिले शुभ संकेत

ब्रिगेडियर आरपी सिंह

बांग्लादेश की सत्ता में शेख हसीना की वापसी से भारत और बांग्लादेश के बेहतर होते रिश्तों में निरंतरता बनी रहेगी

हाल में संपन्न बांग्लादेश चुनाव में प्रधानमंत्री शेख हसीना की अवामी लीग ने ऐतिहासिक जीत हासिल कर सत्ता में वापसी की है। हालांकि विपक्षी दलों ने चुनाव प्रक्रिया पर सवाल खड़े करते हुए उन्हें खारिज किया है। उनका आरोप है कि चुनाव में बड़े पैमाने पर गड़बड़ियां हुई हैं। बहरहाल हसीना की जीत के तुरंत बाद ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उन्हें जीत की मुबारकबाद दी। साथ ही उन्होंने यह विश्वास भी जताया कि दूरदर्शी नेतृत्व में भारत और बांग्लादेश के रिश्ते लगातार बेहतरी की ओर अग्रसर होंगे। बांग्लादेश को लेकर मोदी ने भारत की प्राथमिकता को भी दोहराया। उन्होंने कहा कि भारत क्षेत्रीय विकास, सुरक्षा एवं सहयोग के लिए बांग्लादेश को घनिष्ठ सहयोगी मानता है और वह भारत की 'पड़ोसियों को प्राथमिकता' वाली नीति के केंद्र में है। हसीना 1981 से ही अवामी लीग की अगुआई कर रही हैं और इस चुनाव में भी वह एक दशक से शानदार प्रदर्शन कर रही अर्थव्यवस्था और बढ़ते वस्त्र निर्यात जैसी उपलब्धियों के दम पर चुनावी मैदान में उतरी थीं। बांग्लादेश चीन के बाद दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा वस्त्र निर्यातक बन गया है। करीब 16 करोड़ की आबादी वाले मुस्लिम बहुल बांग्लादेश की चौथी बार प्रधानमंत्री बनीं 71 वर्षीय हसीना दक्षिण एशिया की एक कद्दावर नेता के रूप में उभरी हैं।

बांग्लादेश 16 दिसंबर, 1971 को पाकिस्तान से अलग होकर स्वतंत्र राष्ट्र बना। इससे पहले भीषण रक्तपात हुआ जिसमें पाकिस्तानी सेना द्वारा नरसंहार में 30 लाख निर्दोष लोग मारे गए। एक करोड़ से भी अधिक लोगों ने भारत में शरण ली। उस दौर के तमाम जख्म आज भी बांग्लादेशियों के जेहन में ताजा हैं। उस भयावह दौर में भारत ने ही उनकी मदद की। इसके साथ ही दोनों देशों के रिश्ते भी ऐतिहासिक रूप से अटूट बन गए। एक संप्रभु राष्ट्र के रूप में बांग्लादेश के 47 वर्षों के इतिहास में दो दर्जन से अधिक छोटे-बड़े तख्तापलट हुए। डेढ़ दशक तक सैन्य तानाशाही भी कायम रही जिसमें कमान मुख्य रूप से पाकिस्तान परस्त और भारत से बैर रखने वाले शासकों के हाथ में रही। इस दौरान स्वतंत्रता संघर्ष के इतिहास के रूप-स्वरूप को बिगाड़ कर भारत के योगदान को भी भुला दिया गया। बांग्लादेश आइएसआइ के हाथों में खेलने लगा और भारत के पूर्वोत्तर राज्यों में सक्रिय अलगाववादियों के लिए सुरक्षित पनाहगाह बन गया। बांग्लादेश के राष्ट्रपिता और शेख हसीना के पिता शेख मुजीबुर्रहमान की 1975 में उनके परिवार के कुल 28 सदस्यों सहित हत्या कर दी गई थी जिनमें उनके तीन बेटे भी शामिल थे। हसीना और उनकी छोटी बहन रेहाना इसलिए बच गईं, क्योंकि उस समय वे दोनों जर्मनी में थीं। बांग्लादेश की राजनीति में बीते तीन दशकों से दो बेगमों-खालिदा जिया और शेख हसीना का ही वर्चस्व रहा है। इस दौरान खालिदा दो बार तो शेख हसीना चौथी बार बांग्लादेश की प्रधानमंत्री बनी हैं। 1980 के दशक में जब वे जनरल हुसैन मुहम्मद इरशाद की सैन्य तानाशाही के खिलाफ मिलकर संघर्ष कर रही थीं तो उनके बीच काफी दोस्ताना रिश्ता था, लेकिन बाद में वैचारिक मतभेद बढ़ते गए।

खालिदा जिया ने बीएनपी की कमान संभाली जिसका झुकाव जमात-ए-इस्लामी जैसे कट्टरपंथी धड़ों की ओर था। पार्टी की सोच भी पाकिस्तान परस्त और भारत विरोधी है। खालिदा के दो कार्यकाल में भारत-बांग्लादेश रिश्ते रसातल में चले गए। यह स्थिति बांग्लादेश में एक बड़े तबके को रास नहीं आई जो भारत से बेहतर रिश्तों का हिमायती है। बीएनपी और जमात के संरक्षण में बांग्लादेश की आजादी के खिलाफ अभियान चलाने वाले षड्यंत्रकारियों को अभयदान और जनसंहार में पाकिस्तानी फौज की मदद करने वालों को सत्ता की मलाई खाते देखने से जनता बहुत कुपित हो गई। शेख हसीना के लिए उमड़े अपार जनसमर्थन में यह भाव झलका भी, क्योंकि उन्होंने युद्ध अपराधियों से कोई ममता नहीं दिखाई और वे जमात के उन नेताओं को फांसी पर चढ़ाने में नहीं हिचकीं जो खालिदा की बीएनपी-जमात गठबंधन सरकार में मंत्री हुआ करते थे। खालिदा के बड़े बेटे तारिक जिया बीएनपी-जमात के कुशासन के मुख्य सूत्रधार थे। तारिक ने 2008 में कई मामलों में जमानत हासिल कर ब्रिटेन में शरण ले ली जो अब भगोड़ों को शरण देने के लिए कुख्यात हो गया है।

शेख हसीना की अवामी लीग अपेक्षाकृत सेक्युलर पार्टी है। अन्य मुस्लिम देशों के उलट बांग्लादेशियों की मुस्लिम के रूप में एक धार्मिक पहचान के अलावा बंगाली के तौर पर सांस्कृतिक पहचान भी है। हिंदू और मुसलमान दोनों बंगाली पहचान के दायरे में आते हैं और इससे सहजीवन की सहज प्रवृत्ति विकसित होती है। अधिकांश मुस्लिम देशों के उलट बांग्लादेशी नववर्ष की शुरुआत भी बैसाखी के दिन से होती है और यहां रवींद्र संगीत मुख्यधारा का संगीत है। बांग्लादेश का राष्ट्रगीत भी रवींद्रनाथ टैगोर का ही लिखा हुआ है। वहां अधिकांश घरों में मुस्लिम हस्तियों के साथ ही टैगोर और सुभाष चंद्र बोस की तस्वीरें भी मिल जाएंगी।

असल में तेज आर्थिक वृद्धि, आतंकवाद पर अंकुश, युद्ध अपराधियों पर कार्रवाई और स्थायित्व ने अवामी लीग की जीत में अहम भूमिका निभाई। हालांकि चुनाव में गलत तौर-तरीकों के इस्तेमाल को भी खारिज नहीं किया जा सकता, क्योंकि बांग्लादेश में कोई भी चुनाव ऐसे आरोपों और हिंसा से मुक्त नहीं रहा। सीमावर्ती भारतीय राज्य पश्चिम बंगाल की ही तरह बाहुबल और हिंसा बांग्लादेशी सियासत का भी एक अहम पहलू है। एक गरीब देश में आर्थिक वृद्धि को रफ्तार देने और अपने मुल्क में दमन का दंश झेलने वाले रोहिंग्या मुसलमानों को शरण देने के लिए वैश्विक बिरादरी ने भी शेख हसीना को सराहा। मानव विकास सूचकांक में बांग्लादेश ने ऊंची छलांग लगाई है। उसके पास अनाज का अधिशेष भंडार है। विदेशी मुद्रा भंडार भी मजबूत और आबादी नियंत्रण में है। मगर आलोचक हसीना पर सख्ती से शासन और विपक्ष के पर कतरने के आरोप लगाते हैं।

हसीना की सत्ता में वापसी से भारत-बांग्लादेश संबंधों में निरंतरता बनी रहेगी। भारत बांग्लादेश को अहम पड़ोसी मानता है और उसके साथ बेहतर संबंधों के लिए प्रतिबद्ध है जिसकी अर्थव्यवस्था ऐतिहासिक-भौगोलिक रूप से भारत के पूर्वी भाग से जुड़ी हुई है। पूर्वोत्तर भारत के विकास और भारत की 'एक्ट ईस्ट पॉलिसी' की सफलता में बांग्लादेश की महत्वपूर्ण भूमिका होगी जिसका लाभ यह पूरा क्षेत्र उठाएगा। हसीना अपने पिता शेख मुजीब की समृद्ध विरासत की प्रतिनिधि हैं जिन्होंने अकेले दम पर पाकिस्तान से लोहा लिया था। मैंने उनके भाई शहीद कैप्टन शेख कमाल को प्रशिक्षित किया और उन्हें भी निजी रूप से जानता हूं तो इस आधार पर कह सकता हूं कि हसीना की सरकार में भारत और बांग्लादेश के रिश्ते एक नया क्षितिज गढ़ेंगे।

(लेखक सेवानिवृत्त सैन्य अधिकारी हैं)

response@jagran.com

ऊर्जा

सत्संग

जीवन को समुन्नत बनाने और इसे सुधारने के लिए सत्संग मूलाधार है। जीवन के उद्देश्य की प्राप्ति में सत्संग की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। सत्संग क्या है? इस संसार में तीन पदार्थ-ईश्वर, जीव और प्रकृति-सत हैं। इन तीनों के बारे में जहां अच्छी तरह से बताया जाए, उसे सत्संग कहते हैं। श्रेष्ठ और सात्विक जनों का संग करना, उत्तम पुस्तकों का अध्ययन करना, पवित्र और धार्मिक वातावरण का संग करना, यह सब सत्संग है। सत्संग हमारे जीवन के लिए उतना ही आवश्यक है, जितना शरीर के लिए भोजन। भोजन से हम शरीर की आवश्यकताओं की पूर्ति कर लेते हैं, किंतु आत्मा जो इस शरीर की मालिक है, उसकी संतुष्टि के लिए कुछ नहीं करते।

आत्म तत्व से साक्षात्कार के लिए सत्संग, स्वाध्याय और संध्या आवश्यक है। सत्संग जीवन को निर्मल और पवित्र बनाता है। यह मन के खराब विचारों और पापों को दूर करता है। भतृहरि ने जो लिखा है, उसका आशय है कि 'सत्संगति मूर्खता को हर लेती है, वाणी में सत्यता का संचार करती है। दिशाओं में मान-सम्मान को बढ़ाती है, चित्त में प्रसन्नता और दिशाओं में यश को विकीर्ण करती है।' वस्तुतः सत्संगति मनुष्य का हर तरह से कल्याण करती है। जिस तरह हम साबुन से कपड़े के मैल को धुल डालते हैं, उसी तरह सत्संग अंतःकरण के कलुष को धुल देते हैं। प्रातःकाल का भोजन सायंकाल तक और सायंकाल का भोजन रात्रिभर शरीर को ऊर्जा प्रदान करता है। ऐसे ही सुबह किया हुआ सत्संग पूरे दिन हमें अधर्म और पाप से बचाए रखता है। सायंकाल का सत्संग रातभर हमें कुत्सित विचारों से बचाता है।

मानव सत्संग से सुधरता है और कुसंग से बिगड़ता है। कहा भी गया है कि जैसा होगा संग वैसा चढ़ेगा रंग। सत्संग मानसिक समस्याओं की चिकित्सा है। जब मन में काम, क्रोध रूपी वासनाओं की आंधी उठे और ज्ञान रूपी दीपक बुझने लगे तो ऐसे में सत्संग औषधि का कार्य करता है। विद्वानों का मानना है कि सत्संग से विवेक जागृत होता है। विवेक के जागृत होने पर ही समुचित तौर पर यह जाना जा सकता है कि क्या अच्छा है और क्या खराब? क्या नैतिक है और क्या अनैतिक? सत्संग की महिमा का हमारे धर्मग्रंथों में विस्तृत वर्णन किया गया है।

निष्ठा विद्यालंकार

दूध उत्पादकों की चुनौती

कपिल अग्रवाल

कृषि की अन्य विधाओं की तुलना में दूध उत्पादन कारोबार बहुत सुरक्षित माना जाता रहा है। इस पर मौसम का विपरीत प्रभाव नहीं पड़ता

कभी किसानों के लिए बेहद सुरक्षित और भारी-भरकम मुनाफे का सौदा माने जाने वाला डेयरी कारोबार अब अपनी धार खोता जा रहा है। मवेशियों के रखरखाव तथा चारे आदि की बढ़ती लागत, दूध की कम कीमतें और कथित गोरक्षकों के कारण नए पशुओं की खरीद-बिक्री और अनुपयोगी हो चुके पशुओं को बेचने में आ रही दिक्कतों ने डेयरी कारोबार पर विपरीत प्रभाव डाला है। बीते दस वर्षों के दरम्यान देश में दूध उत्पादन तो 63 फीसद बढ़ गया, पर न तो खपत तथा मांग बढ़ी और न ही कीमतें। दूध कारोबार में लगे किसानों को इस समय दरअसल दो-तरफा संकट झेलना पड़ रहा है। पुरानी समस्याओं से तो वे अभी तक जैसे-तैसे जूझ ही रहे थे, गोवंश सुरक्षा के नाम पर कथित गोरक्षकों द्वारा उत्पीड़न भी उनके कारोबार को पलीता लगा रहा है। इसके चलते जहां अच्छे मवेशियों की कीमत कई गुना बढ़ गई है वहीं अनुपयोगी मवेशियों की कीमत धरातल पर आ गई है।

कृषि की अन्य विधाओं की तुलना में दूध उत्पादन कारोबार बहुत सुरक्षित माना जाता रहा है। इस पर सूखा और बाढ़ आदि का भी बहुत ज्यादा विपरीत प्रभाव नहीं पड़ता। इस बात का अंदाजा सिर्फ इस तथ्य से लगाया जा सकता है कि वर्ष 2009, 2014 और 2015 के दरम्यान पड़े सूखे के बावजूद दूध उत्पादन में भारी-भरकम बढ़ोतरी दर्ज की गई, जबकि अन्य सभी कृषि जिंसों का उत्पादन बुरी तरह प्रभावित हुआ था। आंकड़ों के लिहाज से वैश्विक स्तर पर भारत भले ही दूध उत्पादन में नंबर एक का तमगा पाए हुए है, पर व्यावसायिक दृष्टि से वह कई पायदान नीचे है। कुछ समय पहले तक अतिरिक्त उत्पादन को निर्यात बाजार में खपा दिया जाता था, पर स्किम्ड मिल्क (मलाईरहित दूध) पाउडर की निरंतर घटती कीमतों और अन्य देशों के बेहतर गुणवत्ता वाले सस्ते उत्पादों ने देश के डेयरी कारोबार को तगड़ी चोट दी है। ग्लोबल डेयरी ट्रेड के मुताबिक कम मांग और उत्पादन आधिक्य के चलते पिछले पांच वर्षों के दरम्यान स्किम्ड मिल्क पाउडर की कीमतें 4968 डॉलर प्रति टन से घटकर 1794 डॉलर प्रति टन रह गई हैं। यही कारण है कि भारत का सालाना एक लाख टन स्किम्ड मिल्क पाउडर का निर्यात आज मात्र दस-बारह हजार टन पर सिमटकर रह गया है।

हालात इस समय और भी ज्यादा खराब हैं, क्योंकि दूध और उसके उत्पादों के भंडारण की लागत बहुत ज्यादा आती है जिसे बड़ी-बड़ी निजी डेयरियां तथा सहकारी संस्थाएं ही झेल सकती हैं, पर उनके पास पहले से ही लगभग पौने दो लाख टन का बिना बिका भंडार मौजूद है। फलतः ताजा सीजन में दूध की खरीद कम हुई है और कीमतें बहुत ज्यादा गिर गई हैं। लिहाजा डेयरी कारोबार में लगे बड़े-बड़े किसान भी काम समेट रहे हैं, पर आश्चर्यजनक यह है कि आम जनता के लिए पूरे देश में अभी भी दूध की खुदरा कीमतों में मामूली कमी भी नहीं आई है। देश की आबादी का बहुत बड़ा हिस्सा आज भी दूध और उसके उत्पादों से वंचित है और यदि उत्पादन आधिक्य को मिड डे मील जैसी तमाम जन कल्याणकारी योजनाओं में खपा दिया जाए तो समस्या का काफी हद तक समाधान हो सकता है।

(लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं)

मेलबाक्स

वोट बैंक का जरिया बनता आरक्षण

आर्थिक आरक्षण कितना उपयोगी शीर्षक से लिखे अपने लेख में संजय गुप्त ने केंद्र सरकार द्वारा सामान्य वर्ग के गरीबों को दिए गए दस प्रतिशत आरक्षण के विभिन्न पहलुओं पर अपने विचारों को रखा है। भारतीय संविधान में शिक्षा, संस्कृति, समाज, संसाधन से वंचित किए गए लोगों के लिए आरक्षण की व्यवस्था की गई है। यह समाज में उनको उचित प्रतिनिधत्व दिलाने का एक जरिया है, जबकि अब केंद्र सरकार द्वारा यह आर्थिक आरक्षण का प्रावधान उन लोगों के लिए किया गया है जिनका शिक्षा, संस्कृति, समाज, संसाधन में हमेशा से ही प्रतिनिधित्व रहा है। इससे यह साबित होता है कि आरक्षण की मूल परिभाषा को सरकार ने नजरंदाज किया है। यदि सरकार ने यह अहम फैसला वोट बैंक के लिए अपने कार्यकाल के अंतिम समय में किया है तो इससे भी बेहतर यह होता कि वह विभिन्न सरकारी विभागों में खाली पड़े लाखों पदों को भरने का साहसिक प्रयास करती जिससे कि विभिन्न वर्गों के लोगों को नौकरी का अवसर प्राप्त होता। सरकार को चाहिए था कि वह प्राइवेट सेक्टर में भी आरक्षण को लागू करती जिससे सामाजिक न्याय एवं उचित प्रतिनिधित्व की अवधारणा को बल मिलता।

सर्वजीत आर्या, कन्नौज

दूरियां भी बढ़ा रहा मोबाइल

मोबाइल फोन आज लोगों की जिंदगी का हिस्सा बन गया है। आदमी थोड़ी देर के लिए भी दूर होता है तो वह बेचैन हो जाता है। इसके जरिये किसी से कभी भी संपर्क किया जा सकता है। परंतु इसकी वजह से सामाजिक संबंधों में दूरी भी बन रही है। लोग एक-दूसरे के घर कम आ जा रहे हैं और मोबाइल पर ही बात करके अपनी सारी रिश्तेदारी निभा लेते हैं। जबकि मोबाइल से हम केवल बात कर सकते हैं, भावनाएं व्यक्त नहीं कर सकते। जहां पहले लोग मिलने के लिए दूर -दूर से आते थे कुछ दिन घर पर ठहरते थे। बातें करते थे और भावनात्मक रूप से जुड़ते थे। लेकिन आज फोन मिलाया और कुछ देर बात की उसके बाद फिर वही अकेलापन। पास होते हुए भी दूरी का अहसास आज हमें मोबाइल फोन करा रहा है। यह बात सही है की मोबाइल फोन का त्याग नहीं किया जा सकता, पर इसके उपयोग की आदत को बदला जा सकता है जिससे सामाजिक संबंधों की मजबूती बनी रहे।

सौरभ कांत, शिक्षक, दिल्ली

पोंगल पर राशन

तमिलनाडु सरकार द्वारा आम जनता को पोंगल त्योहार पर एक हजार रुपये और राशन मुफ्त में देने से आम जनता बहुत खुश है। सरकार द्वारा मुफ्त में दी जा रही वस्तुओं को चुनाव से जोड़ा जा रहा है। इससे सरकारी खजाना खाली हो रहा है। इसका भार आम जनता और व्यापारी वर्ग पर ही पड़ेगा। आम जनता मुफ्त की वस्तुओं को बाजारों में फिर से बेच देती है। पहले भी तमिलनाडु सरकार द्वारा टीवी, मिक्सी और अन्य वस्तुएं मुफ्त में जनता को दी गई थीं, लेकिन तमाम लोगों ने टीवी बाजारों में बेच दी। क्योंकि टीवी की गुणवत्ता अच्छी नहीं थी और उसे खुले बाजारों में ओने- पोने दाम में बेच दिया गया।

skcbe9@gmail.com

तकनीक और बेरोजगारी

भारत ने अब काफी तरक्की कर ली है। देश में सोलर और इलेक्ट्रिक एनर्जी से चलने वाले अनेकों वाहन प्रचलन में हैं। लेकिन चीन और अमेरिका के मुकाबले अभी हमारी चाल बेहद धीमी है। साफ्टवेयर उत्पादन क्षेत्र में भारत भले ही शहंशाह हो, लेकिन रोबोट से केवल अमेरिका, चीन और जापान के बच्चे ही खेल रहे हैं। यदि देखा जाए तो भारत को रोबोट से काम लेने की जरूरत भी नहीं है, क्योंकि भारत में श्रम इतना सस्ता है कि बेरोजगार युवाओं की हालत वैसे ही खस्ता है। ऐसे में दुनिया की देखादेखी रोबोट तकनीक को बढ़ावा देना बेरोजगारी की बीमारी को ही बढ़ाना है।

पिंटू सक्सेना, दिल्ली

महिला कलेक्टर की मिसाल

तमिलनाडु की महिला कलेक्टर शिल्पा प्रभाकर सतीश ने अपनी बेटी का आंगनबाड़ी में दाखिला करा कर मिसाल पेश की है। समाजवादी नेता डॉ. राममनोहर लोहिया शुरू से ही निजी स्कूलों के खिलाफ थे। उन्होंने कहा था कि सरकारी स्कूलों में जन सामान्य और उच्च वर्गों के बच्चे एक ही छत के नीचे पढ़ेंगे तो स्कूलों का उत्तरोत्तर सुधार होगा।

hemahariupadhyay@gmail.com

इस स्तंभ में किसी भी विषय पर राय व्यक्त करने अथवा दैनिक जागरण के राष्ट्रीय संस्करण पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए पाठकगण सादर आमंत्रित हैं। आप हमें पत्र भेजने के साथ ई-मेल भी कर सकते हैं।

अपने पत्र इस पते पर भेजें :
दैनिक जागरण, राष्ट्रीय संस्करण,
डी-210-211, सेक्टर-63, नोएडा
ई-मेल: mailbox@jagran.com

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त. पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन. संपादकीय निदेशक-महेन्द्र मोहन गुप्त. प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी- 210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 23359961-62, नोएडा कार्यालय : 0120-3915800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 * इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई शुल्क अतिरिक्त।